By :- Savita Kumari
Dept. of History
J.N.C. Madhubani

भारत की पूर्वपाषाणकालीन संस्कृति की विशेषता
(The Salient Features of the Paleolithic culture in India)

भारत में पाषाणकालीन सभ्यता का अनुसंधान सर्वप्रथम 1863 ई० में शुरु हुआ। भारत में प्राप्त पाषाणकालीन सामग्री एवं केन्द्रों के आधार पर पाषाणकालीन संस्कृति को तीन भागों में बाँटकर अध्ययन किया जा सकता है :-

(1) पूर्व पाषाणकाल (2) मध्य पाषाणकाल (3) नवपाषाणकाल

:पूर्व पाषाणकाल :-

पूर्व-पाषाणकालीन सभ्यता एवं संस्कृति

भारत में 1863 ई० में सर्वप्रथम ब्रूसफूट नामक भू-वैज्ञानिक को मद्रास के निकट पल्लवरम् नामक स्थान पर पूर्व पाषाणकाल का एक पाषाण निर्मित औजार प्राप्त हुआ। इसके पश्चात किंग, ओल्डहम, हैकेट आदि विद्वानों ने भी पूर्व पाषाणकालीन सामग्री प्राप्त की। 19वीं सदी के अंत तक मद्रास, बम्बई, मध्यप्रदेश, उड़ीसा, बिहार, उत्तरप्रदेश, मैसूर, हैदराबाद आदि में अनेक पूर्व-पाषाणकालीन स्थलों की खोज की गई। 1935-35 में डैरा और पैटरसन के नेतृत्व में येल और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयों के विद्वानों के निरीक्षण में पूर्व-पाषाणकालीन सामग्री का अनुसंधान किया गया। उन्होंने हिमालय के प्रदेश में पूर्व-पाषाण युग के अनेक स्थानों की खोज की।

पूर्व पाषाणकालीन संस्कृति केन्द्र :- पूर्व पाषाणकालीन संस्कृति के केन्द्र उत्तर में पाकिस्तान में सोहन की घाटी में, पंजाब में झेलम और चिनाब नदियों की घाटियों में, उत्तरप्रदेश में बाँदा जिले में, अथवा बेलन घाटी में मिले हैं। पूर्व पाषाणकालीन सभ्यता के अवशेष पंजाब हरियाणा के अनेक स्थानों - ढोलबाहा, हॉलनपुर, नालागढ़, गुलेर, डेहरा, और बिलासपुर से प्राप्त हुए हैं।

मध्य भारत में इस सभ्यता के अवशेष नर्मदा और साबरमती की घाटियों में मिले हैं। दक्षिण भारत में इस सभ्यता के केन्द्र तमिलनाडु, कर्नाटक और आन्ध्रप्रदेश में पाये गए हैं। महाराष्ट्र में मुथा नदी के तट पर तथा मुलमुथा नदी के तट पर पूर्वपाषाणकालीन उपकरण मिले हैं।

* 1. भोजन :- पूर्व पाषाणकालीन मानव का जीवन नितान्त बर्बर था। वह पूर्णतया प्रकृति जीवी था। वह कृषि-कर्म से अपरिचित था। अतः सहज रूप में उत्पन्न होनेवाले फल-फूल और कंद-मूल, आखेट में मारे पशुओं तथा नदियों और झीलों पर पकड़ी गई मछलियों से ही वह अपनी उदरपूर्ति करता था। अनेक स्थलों पर मनुष्य की पाषाण-सामग्री और पशुओं के अस्थिपंजर पास-पास मिले हैं। इससे ज्ञात होता है कि पूर्व पाषाणकालीन मनुष्य अनेक पशुओं से परिचित था यद्यपि अभी तक उसने पशुपालन करना नहीं सीखा था। कृषि कर्म और पशुपालन के अभाव में मनुष्य की खाद्य सामग्री सीमित हो गयी थी। परन्तु उस समय जनसंख्या बहुत कम थी। अतः प्रकृति प्रदत्त फल-फूल और कन्द-मूल तथा शिकार से उपलब्ध मांस मछली से ही वह अपनी उदर पूर्ति करता था। आखेटकाल। विद्वानों का मत है कि भारतवर्ष में पूर्व पाषाणकाल में अग्नि का आविष्कार नहीं हुआ था। अतः तत्कालीन मनुष्य कच्चा मांस आदि खाता था।

* 2. निवास-स्थान :- पूर्व पाषाणकालीन मनुष्य के सामने आत्मरक्षा का प्रश्न सर्वाधिक महत्वपूर्ण रहा होगा। अतिशीत, अतिवृष्टि, बाढ़ों और तूफानों से वह त्रस्त रहता था। उसे हिंसक पशुओं का भी सामना करना पड़ता था।

अतः इनसे आत्मरक्षा के लिए उसे सुरक्षित निवास-स्थान की आवश्यकता थी। सर्वप्रथम उसने सघन वृक्षों की शाखाओं का सहारा लिया होगा। परन्तु उन्हें अधिक सुरक्षित न देखकर उसने नदियों के किनारे और पर्वतों की कन्दराओं की शरण ली। इरखनन में आदिकालीन पाषाण-सामग्री इन्हीं स्थानों के निकट प्राप्त हुई है। पूर्व-पाषाणकालीन मनुष्य रचनात्मकता और सदभावना भाव दोनों से ही अपरिचित था। उसकी ध्वंसात्मकता का प्रदर्शन उसके हथियारों और औजारों के रूप में हुआ है।

* 3. आखेट :- पूर्व-पाषाणकालीन मनुष्य का एक प्रमुख कार्य आखेट था। उस युग का मनुष्य शिकारी समूह का एक सदस्य ही था। आखेट करना उसके लिए अनेक प्रकार से लाभदायक सिद्ध हुआ। हिंसक पशुओं के आखेट से मानव-जीवन अधिक सुरक्षित हो गया और मारे गये पशुओं के मांस के रूप में मनुष्य को एक अतिरिक्त खाद्य मिल गया।

* 4. हथियार और औजार :- आखेट के लिए मनुष्य को मारक साधनों की आवश्यकता प्रतीत होती। अतः सर्वप्रथम उसने वृक्षों की शाखाओं और लकड़ी का प्रयोग किया होगा। परन्तु इनकी सहायता से बड़े और हिंसक पशुओं का शिकार करने में उसे कठिनाई का सामना करना पड़ा, तो उसे अन्य सुदृढ़ और अधिक नुकीले साधन की आवश्यकता प्रतीत हुई। अतः उसने बड़े-बड़े पत्थरों का प्रयोग किया और बाद में पाषाणखण्डों से बने हुए हथियारों और औजारों का प्रयोग किया।

* 5. धार्मिक भावनाओं का अभाव :- विद्वानों का अनुमान है कि पूर्व-पाषाणकालीन मनुष्य में किसी प्रकार की धार्मिक भावना का उदय नहीं हुआ था। उत्खनन में कोई भी सामग्री उपलब्ध नहीं हुई है जिससे उसके देवी-देवता अथवा उपासना विधि का अनुमान लगाया जा सके।